डॉ० ओम प्रकाश आर्य
महाराजा कॉलेज

विषय – संस्कृत, बी॰ ए॰ स्नातक (प्रतिष्ठा)
तृतीय वर्ष, षष्ठ पत्र

Date
Page 19|05|20

व्याकरण एवं भाषाविज्ञान

भाषा और बोली :-

प्रायः हम अपने दैनन्दिन जीवन में इन दोनों का प्रयोग इन्हें एक मानकर ही कर लेते हैं। पर भाषा विज्ञान में ये दोनों शब्द पर्यायवाची नहीं हैं। निस्सन्देह बोली का सम्बन्ध भाषा से ही है पर बोली और भाषा में पर्याप्त अन्तर भी है जिसे समझना बहुत ही आवश्यक है।

भाषा और बोली में पहला अन्तर यह है कि जहाँ भाषा के प्रारम्भिक रूप को बोली कहा गया है वहाँ उसकी अत्यधिक परिष्कृत और परिपक्वावस्था को भाषा कहा जाता है। प्रायः अशिक्षित लोगों द्वारा अथवा उनकी सुविधा के लिए बोलचाल में लाए जाने वाले माध्यम को बोली कहते हैं। इसमें सरलता का अंश भी है। क्योंकि प्रायः अशिक्षित समुदाय ही अपने बोलचाल को बाह्य प्रभाव की आडम्बरशीलता से मुक्त रख सकता है और उसे स्वाभाविक रूप से चलाए रख सकता है।

बोली और भाषा में दूसरा अन्तर यह माना गया है कि जहाँ बोली में परिवर्तन की गति कुछ धीमी रहती है वहाँ भाषा में अपेक्षाकृत परिवर्तन नहीं होता या बहुत ही मन्द गति से होता है। बोलियाँ सदा परिवर्तनशील होती हैं। इसके विपरीत भाषा में प्रायः स्थिरता का अंश प्रभावी रहता है। उसमें व्याकरण और परिपाटी का भय दिखाकर भाषा में परिवर्तन को अशुद्ध कहकर निरुत्साहित किया जाता है। इसलिए जहाँ

बोलियाँ दशाब्दियों में ही बदल जाती हैं वहाँ भाषाएँ शताब्दियों तक तो क्या सहस्राब्दियों तक भी वैसी की वैसी बनी रहती है। संस्कृत एक भाषा है। बाल्मीकि की संस्कृत और आज की संस्कृत में बहुत कम परिवर्तन हुआ है क्योंकि व्याकरण ने उसे बाँध रखा है। यही स्थिति साहित्यिक प्राकृतों की हुई है और यही स्थिति आज की साहित्यिक हिन्दी, बंगाली, मराठी, तमिल आदि की होने वाली है।

भाषा और बोली में तीसरा और सबसे महत्त्वपूर्ण अन्तर यह होता है कि जहाँ बोली का क्षेत्र सीमित होता है वहाँ भाषा का क्षेत्र असीमित होता है। इसका कारण यह कि अपने मानवीकृत साहित्यिक रूप को प्राप्त कर लेने के बाद भाषा अपने लिए एक ऐसा आकर्षण पैदा करती है कि वह इन सभी विज्ञ लोगों के प्रयोग का माध्यम बन जाती है जो साहित्य विज्ञान या किसी भी प्रकार की बौद्धिक गतिविधि का आश्रय लेकर अपनी स्वीकृति और मान्यता की परिधि का विस्तार करना चाहते हैं।

भाषावैज्ञानिकों का मानना है कि जहाँ एक बोली की कोई एक ही भाषा होती है वहाँ एक भाषा की अनेक या असंख्य बोलियाँ हो सकती हैं। इसको और अधिक स्पष्ट करने के लिए भाषावैज्ञानिकों ने 'विभाषा' नाम से एक अन्य भाषा रूप की कल्पना की है जिसे वे भाषा और बोली के मध्य रखते हैं। अगर हिन्दी एक भाषा है, उसकी कई

जानी अनजानी सैकड़ों बोलियाँ है तो ब्रज, अवधी, भोजपुरी, मैथिली आदि को 'विभाषा' मान लिया गया है। विभाषा एक तरह से बोली और भाषा के बीच में एक कड़ी के समान है जो बोली के अभ्यस्त आमलोगों को अपनी बोली के समान लगती है जबकि उसमें साहित्य रचना होने के कारण वह भाषा के भी काफी निकट पहुँच जाती है। विभाषा को भाषा इसलिए नहीं कह सकते क्योंकि वह भाषा के समान विस्तृत क्षेत्र को प्रभावित नहीं करती और उसमें अपेक्षाकृत कम मानवीकरण के कारण उसकी काल सम्बन्धी सीमाएँ भी स्पष्ट रहती हैं।

निष्कर्षस्वरूप भाषा के तीन विशिष्टरूप हमारे सामने आते हैं - भाषा, विभाषा और बोली। इति।